كَفَرُوۡا بِمَا عَمِلُوۡا ۙ وَ لَنُذِیۡقَنَّهُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ غَلِیۡظٍ ﴿٥٠﴾ وَ اِذَاۤ اَنۡعَمۡنَا عَلَی

काफ़िरों को जो उन्हों ने किया[128] और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अ़ज़ाब चखाएंगे[129] और जब हम आदमी पर एहसान

الۡاِنۡسَانِ اَعۡرَضَ وَ نَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوۡ دُعَآءٍ عَرِیۡضٍ ﴿٥١﴾

करते हैं तो मुंह फेर लेता है[130] और अपनी त़रफ़ दूर हट जाता है[131] और जब उसे तक्लीफ़ पहुंचती है[132] तो चौड़ी दुआ़ वाला है[133]

قُلۡ اَرَءَیۡتُمۡ اِنۡ كَانَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرۡتُمۡ بِهٖ مَنۡ اَضَلُّ مِمَّنۡ هُوَ

तुम फ़रमाओ[134] भला बताओ अगर येह कुरआन **अल्लाह** के पास से है[135] फिर तुम इस के मुन्किर हुए तो उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो

فِیۡ شِقَاقٍۭ بَعِیۡدٍ ﴿٥٢﴾ سَنُرِیۡهِمۡ اٰیٰتِنَا فِی الۡاٰفَاقِ وَ فِیۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ حَتّٰی

दूर की ज़िद में है[136] अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुन्या भर में[137] और ख़ुद उन के आपे में[138] यहां तक कि

یَتَبَیَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُ الۡحَقُّ ؕ اَوَ لَمۡ یَكۡفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ شَهِیۡدٌ ﴿٥٣﴾

उन पर खुल जाए कि बेशक वोह ह़क़ है[139] क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफ़ी नहीं

اَلَاۤ اِنَّهُمۡ فِیۡ مِرۡیَةٍ مِّنۡ لِّقَآءِ رَبِّهِمۡ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیۡءٍ مُّحِیۡطٌ ﴿٥٤﴾ ع ٦

सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है[140] सुनो वोह हर चीज़ को मुह़ीत़ है[141]

اٰیاتها ٥٣ | ٤٢ سُوۡرَةُ الشُّوۡرٰی مَكِّیَّةٌ ٦٢ | رکوعاتها ٥

सूरए शूरा मक्किय्या है, इस में तिरपन आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

128 : या'नी उन के आ'माले क़बीह़ा और उन के आ'माल के नताइज और जिस अ़ज़ाब के वोह मुस्तह़िक़ हैं उस से उन्हें आगाह कर देंगे। **129 :** या'नी निहायत सख़्त। **130 :** और उस एह़सान का शुक्र बजा नहीं लाता और उस ने'मत पर इतराता है और ने'मत देने वाले परवरदगार को भूल जाता है। **131 :** यादे इलाही से तकब्बुर करता है। **132 :** किसी क़िस्म की परेशानी बीमारी या नादारी वग़ैरा पेश आती है **133 :** ख़ूब दुआ़एं करता है रोता है गिड़गिड़ाता है और लगातार दुआ़एं मांगे जाता है। **134 :** ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा के कुफ़्फ़ार से **135 :** जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं और बराहीने क़त़इय्या साबित करती हैं। **136 :** ह़क़ की मुख़ालफ़त करता है। **137 :** आस्मान व ज़मीन के अक़्त़ार में, सूरज, चांद, सितारे, नबातात, ह़ैवान येह सब उस की क़ुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करने वाले हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन आयात से मुराद गुज़री हुई उम्मतों की उजड़ी हुई बस्तियां हैं जिन से अम्बिया की तक्ज़ीब करने वालों का ह़ाल मा'लूम होता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन निशानियों से मशरिक़ो मग़रिब की वोह फ़ुतूह़ात मुराद हैं जो **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के नियाज़ मन्दों को अन्क़रीब अ़त़ा फ़रमाने वाला है। **138 :** उन की हस्तियों में लाखों लत़ाइफ़े सन्अ़त और बे शुमार अ़जाइबे ह़िक्मत हैं, या येह मा'ना हैं कि बद्र में कुफ़्फ़ार को मग़लूब व मक़्हूर कर के ख़ुद उन के अपने अह़वाल में अपनी निशानियों का मुशाहदा करा दिया, या येह मा'ना हैं कि मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमा कर उन में अपनी निशानियां ज़ाहिर कर देंगे। **139 :** या'नी इस्लाम व क़ुरआन की सच्चाई और ह़क़्क़ानिय्यत उन पर ज़ाहिर हो जाए। **140 :** क्यूं कि वोह बअ़्स व क़ियामत के क़ाइल नहीं हैं। **141 :** कोई चीज़ उस के इह़ात़ए इल्मी से बाहर नहीं और उस के मा'लूमात ग़ैर मुतनाही हैं। **1 :** सूरए शूरा जुम्हूर के नज़्दीक

www.dawateislami.net

حٰمٓ ﴿١﴾ عٓسٓقٓ ﴿٢﴾ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ

यूंही वह्य फ़रमाता है तुम्हारी त़रफ़[2] और तुम से अगलों की त़रफ़[3]

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَهُوَ

अल्लाह इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोही

الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٤﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ

बुलन्दी व अ़ज़मत वाला है क़रीब होता है कि आस्मान अपने ऊपर से शक़ हो जाएं[4] और फ़िरिश्ते

يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ

अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और ज़मीन वालों के लिये मुआ़फ़ी मांगते हैं[5] सुन लो बेशक

اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾ وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ

अल्लाह ही बख़्शने वाला मेहरबान है और जिन्हों ने **अल्लाह** के सिवा और वाली बना रखे हैं[6]

اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَ مَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦﴾ وَ كَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ

वोह **अल्लाह** की निगाह में हैं[7] और तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं[8] और यूंही हम ने

اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا وَ تُنْذِرَ يَوْمَ

तुम्हारी त़रफ़ अ़रबी क़ुरआन वह्य भेजा कि तुम डराओ सब शहरों की अस्ल मक्का वालों को और जितने उस के गिर्द हैं[9] और तुम डराओ इकठ्ठे

الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَ فَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ﴿٧﴾ وَ لَوْ

होने के दिन से जिस में कुछ शक नहीं[10] एक गुरौह जन्नत में है और एक गुरौह दोज़ख़ में और

شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ

अल्लाह चाहता तो उन सब को एक दीन पर कर देता लेकिन **अल्लाह** अपनी रह़मत में लेता है जिसे चाहे[11]

मक्किय्या है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के एक क़ौल में इस की चार आयतें मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई जिन में की पहली ''قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا'' है। इस सूरत में पांच रुकूअ़ तिरपन आयतें आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार पांच सो अठासी ह़र्फ़ हैं। **2 :** ग़ैबी ख़बरें। (خازن) **3 :** अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام में से वह्य फ़रमा चुका। **4 :** **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत और उस के उ़लुव्वे शान से। **5 :** या'नी ईमानदारों के लिये। क्यूं कि काफ़िर इस लाइक़ नहीं हैं कि मलाएका उन के लिये इस्तिग़्फ़ार करें, येह हो सकता है कि काफ़िरों के लिये येह दुआ़ करें कि उन्हें ईमान दे कर उन की मग़्फ़िरत फ़रमा। **6 :** या'नी बुत जिन को वोह पूजते और मा'बूद समझते हैं। **7 :** उन के आ'माल, अफ़्आ़ल उस के सामने हैं, वोह उन्हें बदला देगा। **8 :** तुम से उन के अफ़्आ़ल का मुआख़ज़ा न होगा। **9 :** या'नी तमाम आ़लम के लोग उन सब को। **10 :** या'नी रोज़े क़ियामत से डराओ जिस में **अल्लाह** तआ़ला अव्वलीन व आख़िरीन और अहले आस्मान व ज़मीन सब को जम्अ़ फ़रमाएगा और इस जम्अ़ के बा'द फिर सब मुतफ़र्रिक़ होंगे। **11 :** उस को इस्लाम की तौफ़ीक़ देता है।

www.dawateislami.net

وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۸﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ

और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न मददगार[12] क्या **अल्लाह** के सिवा और वाली

اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۹﴾ ع ع ۹/۲

ठहरा लिये हैं[13] तो **अल्लाह** ही वाली है और वोह मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा और वोह सब कुछ कर सकता है[14]

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ

तुम जिस बात में[15] इख़्तिलाफ़ करो तो उस का फ़ैसला **अल्लाह** के सिपुर्द है[16] येह है **अल्लाह** मेरा रब मैं ने

تَوَكَّلْتُ ۖۗ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۱۰﴾ فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ

उस पर भरोसा किया और मैं उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाता हूं[17] आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हारे लिये

مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ

तुम्हीं में से[18] जोड़े बनाए और नर व मादा चौपाए इस से[19] तुम्हारी नस्ल फैलाता है

لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۱۱﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ

उस जैसा कोई नहीं और वोही सुनता देखता है उसी के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ

की कुन्जियां[20] रोज़ी वसीअ़ करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है[21] बेशक वोह सब कुछ

عَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَآ

जानता है तुम्हारे लिये दीन की वोह राह डाली जिस का हुक्म उस ने नूह़ को दिया[22] और जो हम ने तुम्हारी त़रफ़

اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰۤى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَ

वह़्य की[23] और जिस का हुक्म हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया[24] कि दीन ठीक रखो[25] और

12 : या'नी काफ़िरों को कोई अ़ज़ाब से बचाने वाला नहीं। **13 :** या'नी कुफ़्फ़ार ने **अल्लाह** तआ़ला को छोड़ कर बुतों को अपना वाली बना लिया है, येह बात़िल है। **14 :** तो उसी को वाली बनाना सज़ावार है। **15 :** दीन की बातों में से कुफ़्फ़ार के साथ **16 :** रोज़े क़ियामत तुम्हारे दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा, तुम उन से कहो **17 :** हर अम्र में। **18 :** या'नी तुम्हारी जिन्स में से **19 :** या'नी इस तज़्वीज (जोड़े जोड़े बनाने) से (خازن) **20 :** मुराद येह है कि आस्मान व ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की कुन्जियां ख़्वाह मींह के ख़ज़ाने हों या रिज़्क़ के। **21 :** जिस के लिये चाहे। वोह मालिक है, रिज़्क़ की कुन्जियां उस के दस्ते क़ुदरत में हैं। **22 :** नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام साह़िबे शरअ़ अम्बिया में सब से पहले नबी हैं। **23 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **24 :** मा'ना येह हैं कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से आप तक ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जितने अम्बिया हुए सब के लिये हम ने दीन की एक ही राह मुक़र्रर की जिस में वोह सब मुत्तफ़िक़ हैं, वोह राह येह है **25 :** मुराद दीन से इस्लाम है। मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद और उस की इत़ाअ़त और उस पर और उस के रसूलों पर और उस की किताबों पर और रोज़े जज़ा पर और बाक़ी तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान लाना लाज़िम करो कि येह उमूर तमाम अम्बिया

www.dawateislami.net

لَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ

इस में फूट न डालो[26] मुश्रिकों पर बहुत ही गिरां है वोह[27] जिस की त़रफ़ तुम उन्हें बुलाते हो और **अल्लाह**

يَجْتَبِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ وَ مَا تَفَرَّقُوْۤا

अपने क़रीब के लिये चुन लेता है जिसे चाहे[28] और अपनी त़रफ़ राह देता है उसे जो रुजूअ़ लाए[29] और उन्हों ने फूट न डाली

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

मगर बा'द इस के कि उन्हें इ़ल्म आ चुका था[30] आपस के ह़सद से[31] और अगर तुम्हारे रब की एक बात

رَّبِّكَ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ

गुज़र न चुकी होती[32] एक मुक़र्रर मीआ़द तक[33] तो कब का उन में फ़ैसला कर दिया होता[34] और बेशक वोह जो उन के बा'द किताब के वारिस हुए[35]

مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۴﴾ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَ اسْتَقِمْ كَمَاۤ

वोह इस से एक धोका डालने वाले शक में हैं[36] तो इसी लिये बुलाओ[37] और साबित क़दम रहो[38] जैसा

اُمِرْتَ ۚ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَ قُلْ اٰمَنْتُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ

तुम्हें हुक्म हुवा है और उन की ख़्वाहिशों पर न चलो और कहो कि मैं ईमान लाया उस पर जो कोई किताब **अल्लाह**

كِتٰبٍ ۚ وَ اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ؕ لَنَاۤ اَعْمَالُنَا

ने उतारी[39] और मुझे हुक्म है कि मैं तुम में इन्साफ़ करूं[40] **अल्लाह** हमारा तुम्हारा सब का रब है[41] हमारे लिये हमारा अ़मल

وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَ اِلَيْهِ

और तुम्हारे लिये तुम्हारा किया[42] कोई हुज्जत नहीं हम में और तुम में[43] **अल्लाह** हम सब को जम्अ़ करेगा[44] और उसी की

की उम्मतों के लिये यक्सां लाज़िम हैं। **26 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया कि जमाअ़त रह़मत और फ़ुर्क़त अ़ज़ाब है। ख़ुलासा येह है कि उसूले दीन में तमाम मुसल्मान ख़्वाह वोह किसी अ़ह्द या किसी उम्मत के हों यक्सां हैं इन में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, अलबत्ता अह़काम में उम्मतें ब ए'तिबार अपने अह़वाल व ख़ुसूसिय्यात के जुदागाना हैं, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : "لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا" (हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता रखा) **27 :** या'नी बुतों को छोड़ना और तौह़ीद इख़्तियार करना। **28 :** अपने बन्दों में से उसी को तौफ़ीक़ देता है। **29 :** और उस की इत़ाअ़त क़बूल करे। **30 :** या'नी अहले किताब ने अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के बा'द जो दीन में इख़्तिलाफ़ डाला कि किसी ने तौह़ीद इख़्तियार की कोई काफ़िर हो गया वोह इस से पहले जान चुके थे कि इस त़रह़ इख़्तिलाफ़ करना और फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा हो जाना गुमराही है लेकिन बा वुजूद इस के इन्हों ने येह सब कुछ किया **31 :** और रियासत व नाह़क़ की हुकूमत के शौक़ में। **32 :** अ़ज़ाब के मुअख़्ख़र फ़रमाने की **33 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक **34 :** काफ़िरों पर दुन्या में अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा कर। **35 :** या'नी यहूदो नसारा **36 :** या'नी अपनी किताब पर मज़बूत़ ईमान नहीं रखते या येह मा'ना हैं कि वोह क़ुरआन की त़रफ़ से या सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ से शक में पड़े हैं। **37 :** या'नी उन कुफ़्फ़ार के इस इख़्तिलाफ़ व परागन्दगी की वज्ह से उन्हें तौह़ीद और मिल्लते ह़नीफ़िय्यह पर मुत्तफ़िक़ होने की दा'वत दो। **38 :** दीन पर और दीन की दा'वत देने पर। **39 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला की तमाम किताबों पर, क्यूं कि मुतफ़र्रिक़ीन बा'ज़ पर ईमान लाते थे और बा'ज़ से कुफ़्र करते थे। **40 :** तमाम चीज़ों में और जमीअ़ अह़वाल में और हर फ़ैसले में। **41 :** और हम सब उस के बन्दे। **42 :** हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा। **43 :** क्यूं कि ह़क़ ज़ाहिर

www.dawateislami.net

الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ وَ الَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ

तरफ़ फिरना है और वोह जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बा'द इस के कि मुसल्मान उस की दा'वत क़बूल कर चुके[45]

حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ عَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾

उन की दलील महूज़ बे सबात है उन के रब के पास और उन पर ग़ज़ब है[46] और उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है[47]

اَللّٰهُ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَ الْمِيْزَانَؕ وَ مَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ

अल्लाह है जिस ने ह़क़ के साथ किताब उतारी[48] और इन्साफ़ की तराज़ू[49] और तुम क्या जानो शायद

السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَاۚ وَ الَّذِيْنَ

क़ियामत क़रीब ही हो[50] इस की जल्दी मचा रहे हैं वोह जो इस पर ईमान नहीं रखते[51] और जिन्हें

اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَاۙ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيْنَ

उस पर ईमान है वोह उस से डर रहे हैं और जानते हैं कि बेशक वोह ह़क़ है सुनते हो बेशक जो

يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾ اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ

क़ियामत में शक करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही में हैं अल्लाह अपने बन्दों पर लुत़्फ़ फ़रमाता है[52] जिसे चाहे

مَنْ يَّشَآءُۚ وَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾ ع مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ ع ٢

रोज़ी देता है[53] और वोही क़ुव्वत व इ़ज़्ज़त वाला है जो आख़िरत की खेती चाहे[54]

نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖۚ وَ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ

हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं[55] और जो दुन्या की खेती चाहे[56] हम उसे उस में से कुछ देंगे[57] और आख़िरत

हो चुका ''وَهٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ'' (और येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है) **44 :** रोज़े क़ियामत । **45 :** मुराद उन झगड़ने वालों से यहूद हैं, वोह चाहते थे कि मुसल्मानों को फिर कुफ़्र की त़रफ़ लौटाएं इस लिये झगड़ा करते थे और कहते थे कि हमारा दीन पुराना हमारी किताब पुरानी हमारे नबी पहले, हम तुम से बेहतर हैं । **46 :** ब सबब उन के कुफ़्र के । **47 :** आख़िरत में । **48 :** या'नी क़ुरआने पाक जो क़िस्म क़िस्म के दलाइल व अह़काम पर मुश्तमिल है । **49 :** या'नी उस ने अपनी कुतुबे मुनज़्ज़ला (नाज़िल कर्दा किताबों) में अ़द्ल का हुक्म दिया । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि मुराद मीज़ान से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी है । **50 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया तो मुश्रिकीन ने ब त़रीक़े तक्ज़ीब कहा कि क़ियामत कब होगी ? इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई । **51 :** और येह गुमान करते हैं कि क़ियामत आने वाली ही नहीं, इसी लिये ब त़रीक़े तमस्ख़ुर जल्दी मचाते हैं । **52 :** बे शुमार एह़सान करता है नेकों पर भी और बदों पर भी ह़त्ता कि बन्दे गुनाहों में मश्ग़ूल रहते हैं और वोह उन्हें भूक से हलाक नहीं करता । **53 :** और फ़राख़िये ऐ़श अ़त़ा फ़रमाता है मोमिन को भी और काफ़िर को भी ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत । ह़दीस शरीफ़ में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मेरे बा'ज़े मोमिन बन्दे ऐसे हैं कि तवंगरी उन के क़ुव्वते ईमान का बाइ़स है अगर मैं उन्हें फ़क़ीर मोह़ताज कर दूं तो उन के अ़क़ीदे फ़ासिद हो जाएं और बा'ज़े बन्दे ऐसे हैं कि तंगी और मोह़ताजी उन के क़ुव्वते ईमान का बाइ़स है अगर मैं उन्हें ग़नी मालदार कर दूं तो उन के अ़क़ीदे ख़राब हो जाएं । **54 :** या'नी जिस को अपने आ'माल से नफ़्ए़ आख़िरत मक़्सूद हो **55 :** उस को नेकियों की तौफ़ीक़ दे कर और उस के

www.dawateislami.net

فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِیْبٍ ﴿٢٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّیْنِ

में उस का कुछ हिस्सा नहीं[58] या उन के लिये कुछ शरीक हैं[59] जिन्हों ने उन के लिये[60] वोह दीन निकाल दिया है[61]

مَا لَمْ یَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِیَ بَیْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ

कि अल्लाह ने उस की इजाज़त न दी[62] और अगर एक फ़ैसले का वा'दा न होता[63] तो यहीं उन में फ़ैसला कर दिया जाता[64] और बेशक

الظّٰلِمِیْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِیْنَ مُشْفِقِیْنَ مِمَّا كَسَبُوْا

ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब है[65] तुम ज़ालिमों को देखोगे कि अपनी कमाइयों से सहमे हुए होंगे[66]

وَ هُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِیْ رَوْضٰتِ

और वोह उन पर पड़ कर रहेंगी[67] और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत की

الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا یَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِیْرُ ﴿٢٢﴾

फुलवारियों में हैं उन के लिये उन के रब के पास हैं जो चाहें येही बड़ा फ़ज़्ल है

ذٰلِكَ الَّذِیْ یُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

येह है वोह जिस की ख़ुश ख़बरी देता है अल्लाह अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

قُلْ لَّاۤ اَسْــٴَـلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی ؕ وَ مَنْ یَّقْتَرِفْ

तुम फ़रमाओ मैं इस[68] पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता[69] मगर क़राबत की महब्बत[70] और जो नेक

लिये ख़ैरात व त़ाअ़ात की राहें सह्ल कर के और उस की नेकियों का सवाब बढ़ा कर। **56 :** या'नी जिस का अ़मल मह़्ज़ दुन्या ह़ासिल करने के लिये हो और वोह आख़िरत पर ईमान न रखता हो (مدارک) **57 :** या'नी दुन्या में जितना उस के लिये मुक़द्दर किया है। **58 :** क्यूं कि उस ने आख़िरत के लिये अ़मल किया ही नहीं। **59 :** मा'ना येह हैं कि क्या कुफ़्फ़ारे मक्का उस दीन को क़बूल करते हैं जो अल्लाह तआ़ला ने उन के लिये मुक़र्रर फ़रमाया या उन के कुछ ऐसे शुरका हैं शयात़ीन वग़ैरा **60 :** कुफ़्री दीनों में से **61 :** जो शिर्क व इन्कारे बअ़्स पर मुश्तमिल है। **62 :** या'नी वोह दीने इलाही के ख़िलाफ़ है। **63 :** और जज़ा के लिये रोज़े क़ियामत मुअ़य्यन न फ़रमा दिया गया होता **64 :** और दुन्या ही में तक्ज़ीब करने वालों को गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब कर दिया जाता। **65 :** आख़िरत में और ज़ालिमों से मुराद यहां काफ़िर हैं। **66 :** या'नी कुफ़्र व आ'माले ख़बीसा से जो उन्हों ने दुन्या में कमाए थे। इस अन्देशे से कि अब उन की सज़ा मिलने वाली है। **67 :** ज़रूर उन से किसी त़रह बच नहीं सकते डरें या न डरें। **68 :** तब्लीग़े रिसालत और इर्शाद व हिदायत **69 :** और तमाम अम्बिया का येही त़रीक़ा है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और अन्सार ने देखा कि हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़िम्मे मसारिफ़ बहुत हैं और माल कुछ भी नहीं है तो उन्हों ने आपस में मश्वरा किया और हुज़ूर के हुक़ूक़ व एह़सानात याद कर के हुज़ूर की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जम्अ़ किया और उस को ले कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई, हम ने गुमराही से नजात पाई, हम देखते हैं कि हुज़ूर के मसारिफ़ बहुत ज़ियादा हैं, इस लिये हम येह माल ख़ुद्दामे आस्ताना की ख़िदमत में नज़्र के लिये लाए हैं क़बूल फ़रमा कर हमारी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई की जाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और हुज़ूर ने वोह अम्वाल वापस फ़रमा दिये। **70 :** तुम पर लाज़िम है क्यूं कि मुसल्मानों के दरमियान मुवद्दत व महब्बत वाजिब है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : "اَلْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِیَآءُ بَعْضٍ" और ह़दीस शरीफ़ में है कि मुसल्मान मिस्ल एक इमारत के हैं जिस का हर एक ह़िस्सा दूसरे ह़िस्से को क़ुव्वत और मदद पहुंचाता है। जब मुसल्मानों में बाहम एक दूसरे के साथ महब्बत वाजिब हुई तो सय्यिदे आ़लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के साथ किस क़दर महब्बत फ़र्ज़ होगी। मा'ना येह हैं कि मैं हिदायत व इर्शाद पर

www.dawateislami.net

حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ

काम करे[71] हम उस के लिये उस में और ख़ूबी बढ़ाएं बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है या[72] येह कहते हैं कि

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ

उन्हों ने **अल्लाह** पर झूट बांध लिया[73] और **अल्लाह** चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रह़मत व ह़िफ़ाज़त की मोहर फ़रमा दे[74] और मिटाता है

الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾ وَهُوَ

बात़िल को[75] और ह़क़ को साबित फ़रमाता है अपनी बातों से[76] बेशक वोह दिलों की बातें जानता है और वोही है

الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا

जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है[77] और जानता है जो कुछ

تَفْعَلُوْنَ ۙ﴿۲۵﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ

तुम करते हो और दुआ़ क़बूल फ़रमाता है उन की जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फ़ज़्ल से

مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ

और इन्आ़म देता है[78] और काफ़िरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और अगर **अल्लाह** अपने

الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ

सब बन्दों का रिज़्क़ वसीअ़ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फैलाते[79] लेकिन वोह अन्दाज़े से उतारता है जितना चाहे

اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۷﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا

बेशक वोह अपने बन्दों से ख़बरदार है[80] उन्हें देखता है और वोही है कि मींह उतारता है उन के ना उम्मीद

कुछ उजरत नहीं चाहता लेकिन क़राबत के हुक़ूक़ तो तुम पर वाजिब हैं उन का लिह़ाज़ करो और मेरे क़राबत वाले तुम्हारे भी क़राबती हैं उन्हें ईज़ा न दो। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर से मरवी है कि क़राबत वालों से मुराद हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की आले पाक है। (بخاری) **मस्अला :** अहले क़राबत से कौन कौन मुराद हैं इस में कई क़ौल हैं एक तो येह कि मुराद इस से ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते फ़ात़िमा व ह़सनैन करीमैन हैं رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم। एक क़ौल येह है कि आले अ़ली व आले अ़क़ील व आले जा'फ़र व आले अ़ब्बास मुराद हैं और एक क़ौल येह है कि हुज़ूर के वोह अक़ारिब मुराद हैं जिन पर सदक़ा ह़राम है और वोह मुख़्लिसीने बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब हैं, हुज़ूर की अज़्वाजे मुत़ह्हरात हुज़ूर के अहले बैत में दाख़िल हैं। **मस्अला :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की मह़ब्बत और हुज़ूर के अक़ारिब की मह़ब्बत दीन के फ़राइज़ में से है। (جمل وخازن وغیرہ) **71 :** यहां नेक काम से मुराद या रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की आले पाक की मह़ब्बत है या तमाम उमूरे ख़ैर। **72 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत कुफ़्फ़ारे मक्का **73 :** नुबुव्वत का दा'वा कर के या कुरआने करीम को किताबे इलाही बता कर। **74 :** कि आप को उन की बद गोइयों से ईज़ा न हो। **75 :** जो कुफ़्फ़ार कहते हैं। **76 :** जो अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाईं। चुनान्चे ऐसा ही किया कि उन के बात़िल को मिटाया और कलिमए इस्लाम को ग़ालिब किया। **77** **मस्अला :** तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की ह़क़ीक़त येह है कि आदमी बदी व मा'सियत से बाज़ आए और जो गुनाह उस से सादिर हुवा उस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह से मुज्तनिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की ह़क़ तलफ़ी भी थी तो उस से ब त़रीक़े शरई ओह्दा बरआ हो। **78 :** या'नी जितना दुआ़ मांगने वाले ने त़लब किया था उस से ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाता है। **79 :** तकब्बुर व ग़ुरूर में मुब्तला हो कर। **80 :** जिस के लिये

www.dawateislami.net

قَنَطُوْا وَ يَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَ هُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۸﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ

होने पर और अपनी रह़मत फैलाता है[81] और वोही काम बनाने वाला है सब ख़ूबियों सराहा और उस की निशानियों से

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَ هُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا

है आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और जो चलने वाले इन में फैलाए और वोह उन के इकठ्ठा करने पर[82] जब

يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾ ع وَ مَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ

चाहे क़ादिर है और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया[83] और

يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ ﴿۳۰﴾ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚۖ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ

बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है और तुम ज़मीन में क़ाबू से नहीं निकल सकते[84] और न

دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ ﴿۳۱﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ

अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हारा कोई दोस्त न मददगार[85] और उस की निशानियों से हैं[86] दरिया में चलने वालियां

كَالْاَعْلَامِ ؕ ﴿۳۲﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ

जैसे पहाड़ियां वोह चाहे तो हवा थमा दे[87] कि उस की पीठ पर[88] ठहरी रह जाएं[89]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۙ ﴿۳۳﴾ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े साबिर शाकिर को[90] या उन्हें तबाह कर दे[91] लोगों के गुनाहों के सबब[92] और

يَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ۫ ﴿۳۴﴾ وَّ يَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ

बहुत कुछ मुआफ़ फ़रमा दे[93] और जान जाएं वोह जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उन्हें[94] कहीं भागने की

जितना मुक़्तज़ाए हिक्मत है उस को उतना अ़ता फ़रमाता है। **81 :** और मींह से नफ़्अ़ देता है और क़ह़त़ को दफ़्अ़ फ़रमाता है। **82 :** ह़श्र के लिये। **83 :** येह ख़ित़ाब मोमिनीने मुकल्लफ़ीन से है जिन से गुनाह सरज़द होते हैं, मुराद येह है कि दुन्या में जो तक्लीफ़ें और मुसीबतें मोमिनीन को पहुंचती हैं अक्सर उन का सबब उन के गुनाह होते हैं, उन तक्लीफ़ों को अल्लाह तआला उन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देता है और कभी मोमिन की तक्लीफ़ उस के रफ़्ए दरजात के लिये होती है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में वारिद है। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام जो गुनाहों से पाक हैं और छोटे बच्चे जो मुकल्लफ़ नहीं हैं इस आयत के मुख़ात़ब नहीं। **फ़ाएदा :** बा'ज़े गुमराह फ़िर्क़े जो तनासुख़ के क़ाइल हैं इस आयत से इस्तिद्लाल करते हैं कि छोटे बच्चों को जो तक्लीफ़ पहुंचती है इस आयत से साबित होता है कि वोह उन के गुनाहों का नतीजा हो और अभी तक उन से कोई गुनाह हुवा नहीं तो लाज़िम आया कि इस ज़िन्दगी से पहले कोई और ज़िन्दगी हो जिस में गुनाह हुए हों। येह बात बात़िल है क्यूं कि बच्चे इस कलाम के मुख़ात़ब ही नहीं जैसा कि बिल उ़मूम तमाम ख़ित़ाब आ़क़िलीन बालिग़ीन को होते हैं, पस तनासुख़ वालों का इस्तिद्लाल बात़िल हुवा। **84 :** जो मुसीबतें तुम्हारे लिये मुक़द्दर हो चुकी हैं उन से कहीं भाग नहीं सकते बच नहीं सकते। **85 :** कि उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ तुम्हें मुसीबत व तक्लीफ़ से बचा सके। **86 :** बड़ी बड़ी कश्तियां **87 :** जो कश्तियों को चलाती है। **88 :** या'नी दरिया के ऊपर **89 :** चलने न पाएं। **90 :** साबिर शाकिर से मोमिने मुख़्लिस मुराद है जो सख़्ती व तक्लीफ़ में सब्र करता है और राह़तो ऐ़श में शुक्र। **91 :** या'नी कश्तियों को ग़र्क़ कर दे **92 :** जो उस में सुवार हैं। **93 :** गुनाहों में से कि उन पर अ़ज़ाब न करे। **94 :** हमारे अ़ज़ाब से।

www.dawateislami.net

مَّحِیۡصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَاۤ اُوۡتِیۡتُمۡ مِّنۡ شَیۡءٍ فَمَتَاعُ الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا ۚ وَ مَا عِنۡدَ

जगह नहीं तुम्हें जो कुछ मिला है[95] वोह जीती दुन्या में बरत्ने का है[96] और वोह जो **अल्लाह** के

اللّٰهِ خَیۡرٌ وَّ اَبۡقٰی لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَلٰی رَبِّهِمۡ یَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿٣٦﴾ۚ وَ الَّذِیۡنَ

पास है[97] बेहतर है और ज़ियादा बाक़ी रहने वाला उन के लिये जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा करते हैं[98] और वोह जो

یَجۡتَنِبُوۡنَ كَبٰٓئِرَ الۡاِثۡمِ وَ الۡفَوَاحِشَ وَ اِذَا مَا غَضِبُوۡا هُمۡ یَغۡفِرُوۡنَ ﴿٣٧﴾ۚ

बड़े बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए मुआफ़ कर देते हैं

وَ الَّذِیۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِرَبِّهِمۡ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَ اَمۡرُهُمۡ شُوۡرٰی

और वोह जिन्हों ने अपने रब का हुक्म माना[99] और नमाज़ क़ाइम रखी[100] और उन का काम उन के आपस के मश्वरे

بَیۡنَهُمۡ ۪ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ ﴿٣٨﴾ۚ وَ الَّذِیۡنَ اِذَاۤ اَصَابَهُمُ الۡبَغۡیُ هُمۡ

से है[101] और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं और वोह कि जब उन्हें बग़ावत पहुंचे

یَنۡتَصِرُوۡنَ ﴿٣٩﴾ وَ جَزٰٓؤُا سَیِّئَةٍ سَیِّئَةٌ مِّثۡلُهَا ۚ فَمَنۡ عَفَا وَ اَصۡلَحَ فَاَجۡرُهٗ

बदला लेते हैं[102] और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है[103] तो जिस ने मुआफ़ किया और काम संवारा तो उस का अज्र

عَلَی اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿٤٠﴾ وَ لَمَنِ انۡتَصَرَ بَعۡدَ ظُلۡمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ

अल्लाह पर है बेशक वोह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को[104] और बेशक जिस ने अपनी मज़्लूमी पर बदला लिया उन पर

مَا عَلَیۡهِمۡ مِّنۡ سَبِیۡلٍ ﴿٤١﴾ؕ اِنَّمَا السَّبِیۡلُ عَلَی الَّذِیۡنَ یَظۡلِمُوۡنَ النَّاسَ

कुछ मुआख़ज़े की राह नहीं मुआख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो[105] लोगों पर ज़ुल्म करते हैं

95 : दुन्यवी मालो अस्बाब। **96 :** सिर्फ़ चन्द रोज़, उस को बक़ा नहीं। **97 :** या'नी सवाब वोह **98 शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के हक़ में नाज़िल हुई जब आप ने अपना कुल माल सदक़ा कर दिया और इस पर अ़रब के लोगों ने आप को मलामत की। **99 शाने नुज़ूल :** येह आयत अन्सार के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने अपने रब की दा'वत क़बूल कर के ईमान व ताअ़त को इख़्तियार किया। **100 :** इस पर मुदावमत की। **101 :** वोह जल्दी और ख़ुदराई नहीं करते। हज़रते हसन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : जो क़ौम मश्वरा करती है वोह सहीह राह पर पहुंचती है। **102 :** या'नी जब उन पर कोई ज़ुल्म करे तो इन्साफ़ से बदला लेते हैं और बदले में हद से तजावुज़ नहीं करते। इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि मोमिन दो तरह के हैं **एक** वोह जो ज़ुल्म को मुआफ़ करते हैं पहली आयत में उन का ज़िक्र फ़रमाया गया, **दूसरे** वोह जो ज़ालिम से बदला लेते हैं उन का इस आयत में ज़िक्र है। अ़ता ने कहा कि येह वोह मोमिनीन हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार ने मक्कए मुकर्रमा से निकाला और उन पर ज़ुल्म किया फिर **अल्लाह** तआला ने उन्हें इस सर ज़मीन में तसल्लुत दिया और उन्हों ने ज़ालिमों से बदला लिया। **103 :** मा'ना येह हैं कि बदला क़द्रे जिनायत होना चाहिये इस में ज़ियादती न हो और बदले को बुराई कहना मजाज़ है कि सूरतन मुशाबेह होने के सबब से कहा जाता है और जिस को वोह बदला दिया जाए उसे बुरा मा'लूम होता है और बुराई के साथ ता'बीर करने में येह भी इशारा है कि अगर्चे बदला लेना जाइज़ है लेकिन "अ़फ़्व" इस से बेहतर है। **104 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि ज़ालिमों से वोह मुराद हैं जो ज़ुल्म की इब्तिदा करें। **105 :** इब्तिदाअन।

www.dawateislami.net

وَ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۲﴾ وَ

और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं[106] उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और

لَمَنْ صَبَرَ وَ غَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۴۳﴾ ع وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

बेशक जिस ने सब्र किया[107] और बख़्श दिया तो येह ज़रूर हिम्मत के काम हैं और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे

فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ

उस का कोई रफ़ीक़ नहीं **अल्लाह** के मुक़ाबिल[108] और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब अ़ज़ाब देखेंगे[109]

يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۴﴾ ج وَ تَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا

कहेंगे क्या वापस जाने का कोई रास्ता है[110] और तुम उन्हें देखोगे कि आग पर पेश किये जाते हैं

خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَ قَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

ज़िल्लत से दबे लचे छुपी निगाहों देखते हैं[111] और ईमान वाले कहेंगे

اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ اَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ

बेशक हार में वोह हैं जो अपनी जानें और अपने घर वाले हार बैठे क़ियामत के दिन[112] सुनते हो

اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿۴۵﴾ وَ مَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ

बेशक ज़ालिम[113] हमेशा के अ़ज़ाब में हैं और उन के कोई दोस्त न हुए कि **अल्लाह** के मुक़ाबिल

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۶﴾ ط اِسْتَجِيْبُوْا

उन की मदद करते[114] और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उस के लिये कहीं रास्ता नहीं[115] अपने रब का

لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ

हुक्म मानो[116] उस दिन के आने से पहले जो **अल्लाह** की त़रफ़ से टलने वाला नहीं[117] उस दिन तुम्हें कोई

106 : तकब्बुर और मआ़सी का इरतिकाब कर के। **107 :** ज़ुल्म व ईज़ा पर और बदला न लिया **108 :** कि उसे अ़ज़ाब से बचा सके। **109 :** रोज़े क़ियामत **110 :** या'नी दुन्या में, ताकि वहां जा कर ईमान ले आएं। **111 :** या'नी ज़िल्लत व ख़ौफ़ के बाइस आग को दुज़्दीदा (तिरछी) निगाहों से देखेंगे जैसे कोई गरदन ज़दनी (जिस के सर को क़लम करने का हुक्म हो वोह) अपने क़त्ल के वक़्त तेग़ ज़न (तलवार चलाने वाले) की तलवार को दुज़्दीदा (तिरछी) निगाह से देखता है। **112 :** जानों का हारना तो येह है कि वोह कुफ़्र इख़्तियार कर के जहन्नम के दाइमी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए और घर वालों का हारना येह है कि ईमान लाने की सूरत में जन्नत की जो हूरें उन के लिये नामज़द थीं उन से महरूम हो गए। **113 :** या'नी काफ़िर **114 :** और उस के अ़ज़ाब से बचा सकते। **115 :** ख़ैर का न वोह दुन्या में हक़ तक पहुंच सके न आख़िरत में जन्नत तक। **116 :** और सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी कर के तौह़ीद व इबादते इलाही इख़्तियार करो **117 :** इस से मुराद या मौत का दिन है या क़ियामत का।

يَّوْمَىِٕذٍ وَّ مَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿۴۷﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ

पनाह न होगी न तुम्हें इन्कार करते बने[118] तो अगर वोह मुंह फेरें[119] तो हम ने तुम्हें उन पर निगहबान बना कर

حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

नहीं भेजा[120] तुम पर तो नहीं मगर पहुंचा देना[121] और जब हम आदमी को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा देते हैं[122]

فَرِحَ بِهَا ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ

इस पर खुश हो जाता है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे[123] बदला उस का जो उन के हाथों ने आगे भेजा[124] तो इन्सान बड़ा

كَفُوْرٌ ﴿۴۸﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ

नाशुक्रा है[125] **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत[126] पैदा करता है जो चाहे जिसे चाहे

لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ۙ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ

बेटियां अता फ़रमाए[127] और जिसे चाहे बेटे दे[128] या दोनों मिला दे

ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾ وَ مَا

बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे[129] बेशक वोह इल्म व कुदरत वाला है और किसी

كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ

आदमी को नहीं पहुंचता कि **अल्लाह** उस से कलाम फ़रमाए मगर वह्य के त़ौर पर[130] या यूं कि वोह बशर पर्दए अ़ज़मत के उधर हो[131] या कोई

---

118 : अपने गुनाहों का या'नी उस दिन कोई रिहाई की सूरत नहीं न अ़ज़ाब से बच सकते हो न अपने आ'माले क़बीह़ा का इन्कार कर सकते हो जो तुम्हारे आ'माल नामों में दर्ज हैं। **119 :** ईमान लाने और इत़ाअ़त करने से **120 :** कि तुम पर उन के आ'माल की ह़िफ़ाज़त लाज़िम हो। **121 :** और वोह तुम ने अदा कर दिया। (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْجِهَادِ) **122 :** ख़्वाह वोह दौलतो सरवत हो या सिह़्ह़तो आ़फ़िय्यत या अम्नो सलामत या जाहो मर्तबत **123 :** या और कोई मुसीबत व बला मिस्ल क़ह़्त़ व बीमारी व तंगदस्ती वग़ैरा के रूनुमा हो। **124 :** या'नी उन की ना फ़रमानियों और मा'सियतों के सबब से। **125 :** ने'मतों को भूल जाता है। **126 :** जैसा चाहता है तसर्रुफ़ फ़रमाता है, कोई दख़्ल देने और ए'तिराज़ करने की मजाल नहीं रखता। **127 :** बेटा न दे। **128 :** दुख़्तर न दे **129 :** कि उस की औलाद ही न हो, वोह मालिक है, अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे जिसे जो चाहे दे। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं, ह़ज़रते लूत़ व ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِمَا السَّلَام की सिर्फ़ बेटियां थीं कोई बेटा न था और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द थे कोई दुख़्तर हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने चार फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाए और चार साह़िब ज़ादियां और ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के कोई औलाद ही नहीं। **130 :** या'नी बे वासित़ा इस के दिल में "इल्क़ा" फ़रमा कर और "इल्हाम" कर के बेदारी में या ख़्वाब में इस में वह्य का वुसूल बे वासित़ा सम्अ़ के है और आयत में "اِلَّا وَحْيًا" से येही मुराद है, इस में येह क़ैद नहीं कि इस ह़ाल में सामेअ़ मुतकल्लिम को देखता हो या न देखता हो। मुजाहिद से मन्क़ूल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के सीनए मुबारक में ज़बूर की वह्य फ़रमाई और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को ज़ब्ह़े फ़रज़न्द की ख़्वाब में वह्य फ़रमाई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मे'राज में उसी त़रह़ की वह्य फ़रमाई जिस का "فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى" में बयान है। येह सब इसी क़िस्म में दाख़िल हैं। अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़्वाब ह़क़ होते हैं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद है कि अम्बिया के ख़्वाब वह्य हैं। (تفسیر ابی السعود وکبیر ومدارک وزرقانی علی المواہب وغیرہ) **131 :** या'नी रसूल पसे पर्दा उस का कलाम सुने, इस त़रीक़े वह्य में भी कोई वासित़ा नहीं मगर सामेअ़ को इस ह़ाल में मुतकल्लिम का दीदार नहीं होता। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इसी त़रह़

www.dawateislami.net

رَسُوۡلًا فَيُوۡحِيَ بِاِذۡنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيۡمٌ ﴿۵۱﴾ وَكَذٰلِكَ اَوۡحَيۡنَاۤ

फ़िरिश्ता भेजे कि वोह उस के हुक्म से वह्य करे जो वोह चाहे[132] बेशक वोह बुलन्दी व हिक्मत वाला है और यूंही हम ने तुम्हें वह्य

اِلَيۡكَ رُوۡحًا مِّنۡ اَمۡرِنَا ؕ مَا كُنۡتَ تَدۡرِيۡ مَا الۡكِتٰبُ وَلَا الۡاِيۡمَانُ وَ

भेजी[133] एक जांफ़िज़ा चीज़[134] अपने हुक्म से उस से पहले न तुम किताब जानते थे न अह्कामे शर्अ़ की तफ़्सील

لٰكِنۡ جَعَلۡنٰهُ نُوۡرًا نَّهۡدِيۡ بِهٖ مَنۡ نَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهۡدِيۡۤ

हां हम ने उसे[135] नूर किया जिस से हम राह दिखाते हैं अपने बन्दों से जिसे चाहते हैं और बेशक तुम ज़रूर

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿ۙ۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيۡ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

सीधी राह बताते हो[136] अल्लाह की राह[137] कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ

ع ۵ ۱۳

الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيۡرُ الۡاُمُوۡرُ ﴿۵۳﴾ ع

ज़मीन में सुनते हो सब काम अल्लाह ही की त़रफ़ फिरते हैं

اٰياتها ٨٩ | ٤٣ سُوۡرَةُ الزُّخۡرُفِ مَكِّيَّةٌ ٦٣ | رکوعاتها ٧

सूरए ज़ुख़रुफ़ मक्किय्या है, इस में नवासी आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

معٓ

حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ وَالۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّا جَعَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمۡ

रोशन किताब की क़सम[2] हम ने उसे अ़रबी कुरआन उतारा कि

تَعۡقِلُوۡنَ ۚ﴿۳﴾ وَاِنَّهٗ فِيۡۤ اُمِّ الۡكِتٰبِ لَدَيۡنَا لَعَلِيٌّ حَكِيۡمٌ ؕ﴿۴﴾ اَفَنَضۡرِبُ

तुम समझो[3] और बेशक वोह अस्ल किताब में[4] हमारे पास ज़रूर बुलन्दी व हिक्मत वाला है तो क्या हम तुम

के कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। **शाने नुज़ूल :** यहूद ने हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो अल्लाह तआ़ला से कलाम करते वक़्त उस को क्यूं नहीं देखते जैसा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام देखते थे ? हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने जवाब दिया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام नहीं देखते थे और अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **मस्अला :** अल्लाह तआ़ला इस से पाक है कि उस के लिये कोई ऐसा पर्दा हो जैसा जिस्मानिय्यात के लिये होता है, इस पर्दे से मुराद सामेअ़ का दुन्या में दीदार से मह़जूब होना है। **132 :** इस त़रीक़े वह्य में रसूल की त़रफ़ फ़िरिश्ते की वसात़त है। **133 :** ऐ सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ! **134 :** या'नी कुरआने पाक जो दिलों में ज़िन्दगी पैदा करता है। **135 :** या'नी कुरआन शरीफ़ को **136 :** या'नी दीने इस्लाम। **137 :** जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाई। **1 :** सूरए ज़ुख़रुफ़ मक्किय्या है, इस सूरत में सात रुकूअ़, नवासी आयतें और तीन हज़ार चार सो ह़र्फ़ हैं **2 :** या'नी कुरआने पाक की जिस में हिदायत व ज़लालत की राहें जुदा जुदा और वाज़ेह़ कर दीं और उम्मत के तमाम शरई ज़रूरिय्यात को बयान फ़रमा दिया। **3 :** उस के मआ़नी व अह़काम को। **4 :** अस्ल किताब से मुराद लौहे

www.dawateislami.net